



भा.कृ.अ.प.
ICAR



MATHURA

अजामुख

भा.कृ.अ.प. - केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान
ICAR-Central Institute for Research on Goats
(An ISO 9001:2008 Certified Organization)



सम्पादक मंडल

मुख्य सम्पादक:

डा. भुवनेश्वर राय

सम्पादक :

डा. गोपाल दास

डा. अनु राहल

डा. नीतिका शर्मा

डा. विजय कुमार

डा. चेतना गंगवार

टंकक

जगदीश चन्द्र

निदेशक, भा.कृ.अ.प.-केन्द्रीय
बकरी अनुसंधान संस्थान,
मखदूम, फरह, मथुरा (उ.प्र.)
भारत द्वारा प्रकाशित

<http://www.cirg.res.in>

निदेशक की कलम से

मुझे 'अजामुख' के इस अर्द्धवार्षिक अंक को प्रकाशित करने में अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है, क्योंकि यह बकरी पालकों तक पहुँचने का एक उत्कृष्ट माध्यम है। इस अंक में नवीनतम समाचार, आकर्षक तथ्य और देश भर के पशुपालकों, किसानों और पशु चिकित्सकों के लिए विभिन्न विषयों पर रोचक जानकारियों को विशेष रूप से समाहित किया गया है। वर्तमान मुद्दों जैसे प्रजनन, पोषण, उत्पाद प्रौद्योगिकी,

शरीर क्रिया विज्ञान, स्वास्थ्य प्रबंधन, बकरी रोगों के टीकाकरण और नियंत्रण से संबंधित अध्ययन, विभिन्न तकनीकी और लोकप्रिय लेखों को शामिल किया गया है।

पशु पालन देश भर में सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधियों में से एक होने के साथ, सीमांत और भूमिहीन किसान को आय प्रदान करता है। भारत में 80 प्रतिशत से अधिक पशु पालक कम भूमि जोत वाले हैं। डी.ए. एच.डी. की रिपोर्ट के अनुसार, 2016-17 तक मांस का उत्पादन 7.4 मिलियन टन था और इसमें बकरी के मांस की हिस्सेदारी 1.4 मिलियन टन है, जो कि देश में उत्पादित कुल मांस का 19 प्रतिशत है। पश्चिम बंगाल, देश में बकरी मांस का सबसे बड़ा उत्पादक है, इसके बाद उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और बिहार का स्थान है। आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, तेलंगाना, ओडिशा, झारखंड, कर्नाटक आदि अन्य राज्य हैं जिनमें मांस का उत्पादन काफी अच्छा होता है। इसके अतिरिक्त बकरी का दूध भी बहुउपयोगी है, इसकी मलेरिया या डेंगू की महामारी के दौरान भारी माँग रहती है। बकरी के दूध का सेवन मानव स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है, जो कि बकरी पालकों के लिए लाभप्रद है। उपभोक्ताओं की जरूरतों को पूरा करने के लिए मुर्गीपालन, डेयरी या किसी अन्य कृषि व्यवसाय की तर्ज पर एक संगठित उद्योग की आवश्यकता है, जिसको बकरी पालन द्वारा पूरा किया जा सकता है। इस दौरान संस्थान में माननीय कृषि राज्य मंत्री श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत जी ने दौरा किया और संगठित एवं व्यवस्थित बकरी पालन देखकर उत्साहित हुए। मुझे हार्दिक खुशी हो रही है कि यह संकलन लगातार आपके पास पहुँच रहा है और मैं अजामुख के संपादकीय सदस्यों को उनके सतत प्रयत्नों के लिए बधाई देता हूँ।



Manmohan Singh Chohan

(मनमोहन सिंह चौहान)

निदेशक

बकरियों के लिए चारा उत्पादन का यंत्रीकरण

अरविंद कुमार, मोहम्मद आरिफ, रवीन्द्र कुमार एवं मनोज कुमार सिंह

आधुनिक युग में आर्थिक रूप से सफल बकरी पालन में कम लागत से चारे एवं दाने के उत्पादन एवं उपयोग का महत्वपूर्ण योगदान है। भरपूर चरागाह की कमी के कारण चारे की फसल का उत्पादन कर उसे बाड़े में लाकर बकरियों को खिलाने से ही आहार की पूर्ति हो सकती है। चारे की फसल के निर्धारण में उत्तम गुणवत्ता एवं पोषक तत्वों वाली फसलों का चयन किया जा सकता है। अनाज वाली चारे की फसलों से ऊर्जा युक्त बायोमास मिलता है। इनके चारे की गुणवत्ता फूल आने के बाद घटने लगती है। इस समूह में मक्का, ज्वार, बाजरा, जई आदि हैं। चारे की दलहनी फसलों में प्रोटीन काफी अधिक मात्रा में पाया जाता है। इसमें लोबिया, लुसर्न, बरसीम, स्टिलो घास आदि चारा फसलें मुख्य हैं। इसके अतिरिक्त जड़ वाली फसलें जैसे शलजम, गाजर एवं चारा चुकंदर आदि को भी पूरक चारा के रूप में उगाया जा सकता है। चारा उत्पादन से लेकर उसके प्रसंस्करण तक की क्रियाओं का यथासम्भव यंत्रीकरण करके उत्पादन लागत कम किया जा सकता है तथा बकरी पालन से अधिक लाभ पाया जा सकता है। इन क्रियाओं हेतु छोटे स्तर से विभिन्न यंत्रों द्वारा उत्पादन किया जा सकता है।

चारा उत्पादन में उपयोगी यंत्र

बड़े फार्मों पर चारे की समुचित उपलब्धता बनाए रखने के लिए चारा फसलों के उत्पादन का यंत्रीकरण आवश्यक है। इसमें खेत तैयार करने के यंत्र जैसे पावरटिलर, रोटावेटर एवं ट्रैक्टर चालित मिट्टी पलट हल तथा कल्टीवेटर आदि आते हैं। बुवाई एवं रोपण कार्यों के यंत्रीकरण के लिए विभिन्न उपकरण उपलब्ध हैं। व्हीलहो ड्रिल एक मानव चालित यंत्र है जिसका उपयोग जई, जौ, ज्वार, बाजरा, मक्का, लोबिया आदि की थोड़े क्षेत्रफल में कतार में बुवाई के लिए किया जा सकता है। समायोज्य कतार बनाने का यंत्र एक मानव चालित यंत्र है जिसका उपयोग फसलों के अनुसार कतार से कतार की दूरी को सुनिश्चित रखने के लिए किया जाता है। ट्रैक्टर चालित बुवाई यंत्र का उपयोग चारा फसल के छोटे एवं हल्के बीजों जैसे बरसीम आदि को बड़े क्षेत्र में कतार में बोने के लिए किया जाता है। कतार में फसल बोने से निराई गुड़ाई का कार्य उचित यंत्रों की सहायता से कम समय में किया जा सकता है। एक अन्य ट्रैक्टर चालित बीज एवं उर्वरक बोनी यंत्र है जिसका उपयोग मिश्रित चारा फसलों (जैसे ज्वार और लोबिया) एवं उर्वरक को एक साथ बोने के लिए किया जाता है। अन्य यंत्रों की तुलना में इससे निश्चित समय में अधिक

क्षेत्रफल में बुवाई की जा सकती है। निराई गुड़ाई यंत्र खरपतवार निकालने एवं मिट्टी भुरभुरी करने के काम आते हैं। छोटे क्षेत्रफल के लिए मानव चालित एवं बड़े क्षेत्रफल के लिए शक्ति चालित यंत्र उपलब्ध हैं। सामान्यतः शक्ति चालित यंत्र चौड़ी कतार में बोई जाने वाली चारे की फसलों के लिए उपयोगी हैं। चारा फसल कटाई यंत्रों में हस्त चालित दांतेदार हंसिया जैसे छोटे यंत्र से लेकर जटिल ट्रैक्टर चालित बड़े यंत्र उपलब्ध हैं। आवश्यकतानुसार इनका उपयोग खेत में उगे चारे को काटने के लिए सुगमता से किया जा सकता है। वर्टिकल कॉन्वेयर रीपर एक मानव नियंत्रित, स्वचालित मशीन है जिसे अनाज, दलहनी एवं चारा वाली फसलों को काटने के लिए किया जाता है। ट्रैक्टर चालित कटर /हार्वेस्टर ट्रैक्टर के पीछे जोड़कर चलाया जाता है।



समायोज्य कतार बनाने का यंत्र



वर्टिकल कॉन्वेयर रीपर



ट्रैक्टर चालित खाद एवं मिश्रित बीज बोनी यंत्र



ट्रैक्टर चालित कटर/हार्वेस्टर

(सौजन्य से भाकृपअनुप-आईजीएफआरआई)

जैव विविधता का दुश्मन : गाजर घास

गाजर घास जिसका वानस्पतिक नाम *पार्थेनियम हिस्टेरोफोरस* है को अन्य नामों जैसे सफेद टोपी, कांग्रेस घास आदि नामों से भी जाना जाता है। यह घास



एस्टेरेसी (कम्पोजीटी) कुल का सदस्य है। यह माना जाता है कि गाजर घास हमारे देश में सन् 1950-55 के दौरान जब हमने अमेरिका से गेहूँ आयात किया था तब प्रवेश कर गया था। यह सर्वप्रथम हमारे देश में वर्ष 1955 में महाराष्ट्र (पूना) में दिखाई दिया था एवं इसके पश्चात् यह हमारे पूरे देश में जंगल की आग की तरह फैल गया तथा आज इसने इतना विकराल रूप धारण कर लिया है कि यह हमारे देश के लगभग 35 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र में फैल चुका है।

गाजर घास की पहचान एवं जीवन चक्र

यह एक वर्षीय शाकीय पौधा होता है जिसकी लम्बाई सामान्यतः 1.5-2.0 मीटर तक होती है। इसका तना एवं पत्तियाँ रोयेदार होती हैं एवं तना अत्यधिक शाखा युक्त होता है। इसकी पत्तियाँ गाजर की तरह नजर आती हैं इसलिए इसे गाजर घास कहा जाता है। यह पौधा लगभग 3-4 माह में अपना जीवन चक्र पूर्ण कर लेता है एवं इस प्रकार एक वर्ष में यह अपनी 2-3 पीढ़ियाँ पूर्ण कर लेता है। गाजर घास का एक पौधा लगभग 10000-25000 तक बीज उत्पन्न कर सकता है। इसके बीजों में सुप्तावस्था नहीं पाई जाती है एवं साथ ही इसके बीज प्रकाश व तापमान के प्रति असंवेदनशील होते हैं अतः नमी पाकर यह पुनः अंकुरित हो जाते हैं।

गाजर घास की पारिस्थितिकी एवं फैलाव

सामान्यतः गाजर घास का पौधा हर तरह के वातावरण में उगने की अभूतपूर्व क्षमता रखता है। यह हर प्रकार की भूमि चाहे वह अम्लीय हो या क्षारीय आसानी से उग जाता है। कुछ वर्षों पहले तक इस पौधे की बहुतायत अनुपयोगी भूमि, बंजर भूमि, रेलवे लाइन के किनारे, सड़कों के किनारे, सिंचाई के स्रोतों के पास आदि थी परन्तु आज इस पौधे ने हमारी खेती योग्य भूमि में भी प्रवेश कर लिया है एवं यह हमारी फसलों को भी नुकसान पहुँचा रहा है। गाजर घास से निकलने वाले एलिलोकेमिकल्स स्थानीय वनस्पतियों का अंकुरण कम कर धीरे-धीरे उन्हें विस्थापित कर देते हैं एवं इस प्रकार यह स्थानीय क्षेत्र की जैव विविधता को नष्ट कर देते हैं। गाजर घास का फैलाव एवं

मोहम्मद आरिफ, अरविन्द कुमार, एम के सिंह एवं सुगड़ सिंह

वितरण मुख्यतः इसके बीजों द्वारा होता है। इसका एक अकेला पौधा 10000-25000 तक बीज उत्पन्न करता है जो हवा के साथ या जल व अन्य मानवीय क्रियाओं द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान तक फैलते रहे हैं।

गाजर घास के दुष्प्रभाव

गाजर घास में सेस्कुटेरपिन लेक्टोन नामक रसायन पाया जाता है जिसको पार्थेनिन के नाम से भी जाना जाता है। इस रसायन के लगातार सम्पर्क में रहने से मनुष्यों में त्वचा सम्बन्धी रोग (डर्माटाइटिस), एनक्सिया, एलर्जी, बुखार, दमा इत्यादि बीमारियाँ हो जाती हैं पशुओं के लिए भी यह घास बहुत हानिकारक है पशुओं द्वारा इसको खाने से पशुओं के दूध में कड़वाहट आ जाती है एवं दूध उत्पादन भी कम हो जाता है साथ ही यह पशुओं में भी त्वचा सम्बन्धी रोग उत्पन्न कर देती है। गाजर घास द्वारा फसलों के उत्पादन पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है क्योंकि इससे एलिलोकेमिकल्स निकलते हैं जो कि अन्य फसलों के अंकुरण के साथ ही उनके उत्पादन को भी कम करता है।

गाजर घास के नियंत्रण के उपाय:

सर्वप्रथम इस घास के फैलाव को रोकना अत्यंत आवश्यक है इसके लिए जरूरी है कि इसके फूल आने से पहले ही इसको नष्ट कर दें। अगर भूमि नम है तो इसे जड़ से उखाड़ दें। इसके पश्चात् इसे जला दें या कम्पोस्ट बनाने के लिए गढ़े में दबा दें। उखाड़ते समय हाथ में दस्ताने एवं सुरक्षात्मक कपड़ों का इस्तेमाल करें।

सामुदायिक स्तर पर गाजर घास के पौधे उखाड़ना

- रसायनों के प्रयोग द्वारा भी इस घास को नष्ट किया जा सकता है इसके लिए अचयनात्मक शाकनाशी जैसे ग्लाइफोसेट (1.0-1.5 प्रतिशत) का घोल इस्तेमाल किया जा सकता है।
- इस घास का नियंत्रण इसके जैविक शत्रु कीट मेक्सिन बीटल (जाइगोग्रामा बाइकोलेराटा) से भी किया जा सकता है यह कीट इस घास की पत्तियों को खा जाता है एवं इसे सुखाकर मार देता है।
- कुछ प्रतिस्पर्धी वनस्पतियों जैसे चकौड़ा जंगली चौलाई आदि के प्रयोग द्वारा भी गाजर घास को विस्थापित किया जाता है।
- इस घास के नियंत्रण के लिए जरूरी है कि इसके दुष्प्रभावों के बारे में आस-पास के लोगों, ग्रामीणों, किसानों को जागरूक किया जाये।

जमुनापारी बकरी

साकेत भूषण एवं गोपाल दास

जमुनापारी भारत में पाई जाने वाली सभी बकरी नस्लों में सर्वाधिक ऊँची तथा लम्बी होती है। इस नस्ल की बकरी दुग्ध उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। इसका उद्गम स्थान उत्तर प्रदेश के इटावा जिले का चकरनगर क्षेत्र माना जाता है। इटावा जिले के अलावा इस नस्ल की बकरी मध्यप्रदेश राज्य के भिंड, मुरैना तथा दतिया जिलों के चम्बल तथा यमुना नदी से लगे गाँवों में बहुतायत से पाई जाती हैं। जमुनापारी नस्ल के बकरों का प्रयोग अपने देश के विभिन्न जलवायु में पाई जाने वाली अन्य छोटे तथा मध्यम आकार की बकरियों के नस्ल सुधार हेतु किया गया है। विदेश की एंग्लोनुवियन बकरियों के विकास में जमुनापारी नस्ल का विशेष योगदान रहा है। वैज्ञानिक अनुसंधान से यह पता चला है कि जमुनापारी सभी तरह की जलवायु के लिए उपयुक्त नहीं है। इस नस्ल की बकरियाँ दूध तथा मांस उत्पादन हेतु उपयुक्त हैं। उपयुक्त खान-पान व प्रबंधन में यह बकरियाँ दो वर्ष में तीन बार बच्चों को जन्म देती हैं तथा लगभग 40 प्रतिशत बकरियाँ एक से अधिक बच्चे जनती हैं।

रंग एवं शरीर रचना

शुद्ध नस्ल की जमुनापारी बकरी सामान्यतः सफेद रंग की होती है। आम तौर पर गर्दन, चेहरे व कानों पर हल्के भूरे रंग के धब्बे पाये जाते हैं तथा कभी-कभी शरीर पर भूरे या काले रंग के धब्बे भी पाए जाते हैं। इस नस्ल का विशिष्ट चरित्र रोमन नाक या तोते जैसा मुँह है। बालों के गुच्छे के साथ एक इनकी अत्यधिक उत्तल नाक रेखा होती है। कान बहुत लम्बे, सीधे और लटकते होते हैं। दोनों लिंगों में छोटी और पतली पूँछ होती है। इस नस्ल में लम्बे और तिकोने थन के साथ पूर्ण विकसित अयन होता है जो कि आकार में गोल रहता है। सींग छोटे व चौड़े होते हैं। कान 10-12 इंच लम्बे चौड़े मुड़े हुए तथा लटकते रहते हैं। इसके जाँघ में पीछे की ओर काफी लम्बे घने बाल रहते हैं। देखने में यह बकरी सुंदर तथा आकर्षक लगती है। वयस्क मादा बकरी के पूँछ से नीचे दोनों पैरों के ऊपर पीछे लम्बे बाल भी हो जाते हैं। वयस्क नर के माथे तथा नाक के ऊपर बालों का गुच्छा बन जाता है जो वयस्क मादा को बहुत आकर्षक बना देता है।



वजन एवं आकार

वयस्क नर का वजन 50 से 60 कि.ग्रा. तक तथा वयस्क मादा का वजन 40 से 50 कि.ग्रा. तक होता है। वयस्क नर के शरीर की औसत लम्बाई 87 से.मी. तथा वयस्क मादा के शरीर की औसत लम्बाई 83 से.मी. के लगभग होती है। वयस्क नर का औसत छाती घेरा 82 से.मी. तथा वयस्क मादा का औसत छाती घेरा 78 से.मी. के लगभग पाया गया है। इसके बच्चों का जन्म के समय औसत वजन 2.5-3.0 किलो ग्राम होता है। इस नस्ल की बकरियाँ अपने गृह क्षेत्र में औसतन 1.5 से 2.0 किलो ग्राम दूध प्रतिदिन देती हैं और इनकी कुल दुग्ध उत्पादन करीब 200 लीटर है। जन्म के 3, 6, 9, व 12 माह पर बच्चों का औसत वजन क्रमशः 3.28, 11.23, 15.78, 21.88 तथा 27.17 कि.ग्रा. तक पाया गया। डेढ़ साल की उम्र में मादा तथा दो साल की उम्र में नर प्रजनन के योग्य हो जाता है।

दुग्ध उत्पादन एवं जनन क्षमता

इसका 150 दिन में औसत दूध 110 लीटर तक पाया गया है। अच्छी बकरी को पर्याप्त चारा दाना देने पर पूर्ण दुग्ध काल में बकरी से एक दिन में अधिकतम दुग्ध 3.0 लीटर से अधिक लिया जा सकता है। जमुनापारी नस्ल में बहु बच्चा जनन क्षमता कम होती है। इसमें बहु बच्चा जनन क्षमता 40 प्रतिशत तक पाई गई है अर्थात् 2 या 3 बच्चे देने की क्षमता अधिकतम केवल झुंड की 40 प्रतिशत बकरियों तक ही पाई गई है। प्रजनन मुख्य रूप से वर्ष में दो बार फरवरी-मार्च तथा सितम्बर-अक्टूबर में होता है।

बकरी पालन में महिलाओं की अहम भूमिका

भारत एक कृषि आधारित देश है एवं पशुपालन इसका अभिन्न अंग है। हमारे देश में पशु पालन मुख्य रूप से महिलाओं पर ही आधारित है। जिससे यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि वास्तविक रूप से बकरी पालन नारीकृत हो रहा है। बकरी क्षेत्र में रोजगार सृजन की असीम संभावनाएं हैं और यह प्राकृतिक आपदाओं, प्रतिकूल एवं बदलती पर्यावरणीय परिस्थितियों, फसल उत्पादन में अनिश्चितता और विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में पूरे वर्ष किसानों को आजीविका का वैकल्पिक स्रोत प्रदान करता है। बकरियां प्रतिकूल वातावरण में उपलब्ध घास और विभिन्न प्रकार के वृक्षों का कुशलतापूर्वक उपयोग कर सकती हैं। ग्रामीण गरीब महिलाएं जो बड़े जानवर को पालने में सक्षम नहीं हैं, उनके लिए बकरी पालन पूरक आय के स्रोत के रूप में उत्तम वैकल्पिक स्रोत है।

महिलाओं के योगदान के बिना पशुधन क्षेत्र में प्रगति संभव नहीं है। गाय और भैंस के विपरीत, कुछ बकरियों को महिलाओं या घर की बुजुर्ग महिलाओं द्वारा आसानी से पाला जा सकता है। बकरियां न केवल आय का स्रोत प्रदान करती हैं बल्कि अपने परिवार की पोषण

चेतना गंगवार, बृजमोहन, विजय कुमार, ए.के. दीक्षित

सुरक्षा का बीमा भी हैं। अध्ययन से पता चला कि मथुरा जनपद की ग्रामीण क्षेत्रों में बकरियों की बिक्री / खरीद (54.08 प्रतिशत), बकरियों की चराई (56.48 प्रतिशत), बकरियों को चारा खिलाने और पानी पिलाने (75.1 प्रतिशत), बच्चों की देखभाल (83.21 प्रतिशत), बाड़ों और घर की सफाई जैसी प्रमुख गतिविधियाँ, बाड़े का रखरखाव (72.18 प्रतिशत), बकरियों का दूध निकालाना (84.39 प्रतिशत), स्वास्थ्य प्रबंधन (82.23 प्रतिशत) और बकरियों का प्रजनन प्रबंधन (60.41 प्रतिशत) मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा किया गया। इसके अलावा, पशु पालन के अन्य क्षेत्रों में भी महिलाओं की काफी भागीदारी और योगदान रहा है। उपरोक्त आकड़ों से पता चलता है कि बकरियों के क्रय-विक्रय में पुरुषों की भागीदारी अधिक है, जो कि लैंगिक असमानता दर्शाता है। इसलिए पशुधन क्षेत्र में लैंगिक पूर्वाग्रह को ठीक करने की बेहद आवश्यकता है। बकरी पालन की जरूरतों को पूरा करने के लिए महिलाओं की क्षमता और उनमें आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए प्रयासों की आवश्यकता है।



विशिष्ट अतिथि दौरा

पुलिस उप महानिदेशक आगरा रेंज श्री लव कुमार ने भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान मखदूम का दौरा किया। उन्हें संस्थान के शोध कार्य और बकरी विकास के क्षेत्र में इसके प्रयासों के बारे में जानकारी ली। इसके साथ ही उन्होंने पशुओं के बाड़ों का दौरा किया और पशुओं प्रबंधन का निरीक्षण किया।



प्रसार एवं किसान शिक्षा कार्यक्रम / प्रशिक्षण / कार्यशाला / संगोष्ठी

किसानों के लिए आयोजित राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

- 76वां आठ दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 'वैज्ञानिक बकरी पालन' 19 जुलाई से 26 जुलाई, 2018 तक आयोजित किया गया जिसमें 16 राज्यों के 90 प्रतिभागियों (9 महिलाओं) ने भाग लिया।
- 77वां आठ दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 'वैज्ञानिक बकरी पालन' 24 अगस्त से 31 अगस्त, 2018 तक आयोजित किया गया जिसमें 12 राज्यों के 57 किसानों ने भाग लिया।
- 78वां आठ दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 'वैज्ञानिक बकरी पालन' 11 अक्टूबर से 18 अक्टूबर, 2018 तक आयोजित किया गया जिसमें 16 राज्यों के 83 प्रतिभागियों (4 महिलाओं) ने भाग लिया।

प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

- बैफ, इलाहाबाद द्वारा प्रायोजित 2 दिवसीय वैज्ञानिक बकरी पालन का 5 से 6 सितंबर 2018 को आयोजन किया गया। जिसमें 20 किसानों ने भाग लिया।
- आई.सी.ए.आर-आई.एल.आर.आई. सहयोगी परियोजना द्वारा प्रायोजित बकरी के दूध और मांस मूल्य श्रृंखला का विकास में बिहार के 31 बकरी पालकों (26 महिलाओं) ने भाग लिया। यह आयोजन 1 से 5 नवंबर, 2018 को आयोजित किया गया।
- आई.सी.ए.आर-आई.एल.आर.आई. सहयोगी परियोजना द्वारा प्रायोजित बकरी के दूध और मांस मूल्य श्रृंखला का विकास में बिहार के 26 बकरी पालकों ने भाग लिया। यह आयोजन 20-24 नवंबर 2018 को आयोजित किया गया।
- संस्थान ने 27 नवंबर से 11 दिसंबर, 2018 प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जो मैनेज हैदराबाद द्वारा प्रायोजित था। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 17 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। जिसमें पशु चिकित्सा अधिकारी एवं कृषि विज्ञान केन्द्र के विषय वस्तु विशेषज्ञ, सत्रह राज्यों के सम्मिलित थे। इसमें वैज्ञानिक विधि से बकरी पालन प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत 46 व्याख्यान के साथ-साथ विधियों का प्रदर्शन एवं क्षेत्र का दौरा भी शामिल था।
- डी.बी.टी. के ट्विनिंग प्रोग्राम के अन्तर्गत 13 से 22 नवम्बर, 2018 को फ्लोरमेंटोगोनियल स्तम्भ कोशिका'' का 10 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें पूर्वोत्तर राज्य के 7 प्रशिक्षार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।



प्रसार एवं किसान शिक्षा कार्यक्रम / प्रशिक्षण / कार्यशाला / संगोष्ठी

किसान प्रशिक्षण एवं प्रसार कार्यक्रम

- वीर्य हिमीकरण और कृत्रिम गर्भाधान पर 7 दिवसीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन भा.कृ.अनु.प. - केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान द्वारा 14 सितम्बर से 20 सितम्बर, 2018 में आयोजित किया गया। जिसमें 11 राज्यों के 20 प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।
- 16 से 21 जुलाई, 2018 छः दिवसीय को किसान कलागी उन्नत बीहू-बिजन कार्यक्रम आई.एफ.ए.डी. भूटवाल, नेपाल द्वारा प्रायोजित मांस उत्पादन, डेयरी और पशु पोषण प्रबंधन क्षमता वृद्धि प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन हुआ।
- भा.कृ.अनु.प. द्वारा प्रायोजित ग्रीष्म कालीन 21 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 'सूक्ष्म जैविकीय एवं स्पैक्ट्रो मीटरी विधि द्वारा पशु उपोत्पाद, गुणवत्ता एवं सुरक्षा का आंकलन' 31 जुलाई, 2018 से 20 अगस्त 2018 तक आयोजित किया गया।



प्रदर्शनी / किसान मेला

- नगला चन्द्रभान, फरह मथुरा में आयोजित कृषि विकास ग्राम विकास प्रदर्शनी में भाग लिया, जो कि 06-08 अक्टूबर 2018 को आयोजित की गई।
- बकरी प्रौद्योगिकी पर भा.कृ.अनु.प. - सी.आई.आर.जी. ने दून इंटरनेशनल डेयरी और एग्री एक्सपो 2018 में 12-14 अक्टूबर 2018 को देहरादून, उत्तराखंड में भाग लिया।
- बकरी उत्पादन तकनीक का कृषि कुम्भ के आयोजन के अवसर पर आई.आई.एस. आर. लखनऊ में 26-28 अक्टूबर 2018 में प्रदर्शन किया गया।
- पशु आरोग्य मेला, मोतीहारी, बिहार में 23-25 दिसंबर 2018 को संस्थान ने भाग लिया।



सभा / आयोजन

● विश्व मृदा दिवस

भा.कृ.अनु.प. - केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान ने 5 दिसंबर 2018 को विश्व मृदा दिवस मनाया जिसमें 75 किसानों, प्रशिक्षुओं और वैज्ञानिकों ने भाग लिया। इस अवसर पर, निदेशक भा.कृ.अनु.प. - केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान ने किसानों को संबोधित किया और मृदा स्वास्थ्य और मृदा स्वास्थ्य कार्ड की उपयोगिता बतायी एवं जैविक खेती के महत्व पर प्रकाश डाला।



● बकरी उत्पादों के व्यवसाय और विपणन के अवसरों पर विचार-मंथन

भा.कृ.अनु.प. - केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान मखदूम में 7 दिसंबर, 2018 को बकरी उत्पादों में व्यवसाय और विपणन अवसर पर विचार मंथन सत्र का आयोजन किया। प्रो. पी.एस. बिरथल भा.कृ.अनु.प. - नेशनल प्रोफेसर, आईसीएआर-नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चर इकोनॉमिक्स एंड पॉलिसी रिसर्च (एनआईईपी), नई दिल्ली ने इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। इस कार्यक्रम में बकरी किसानों, व्यवसायिक बकरी पालक, व्यापारी इत्यादि लोग सम्मिलित हुए। इसके साथ ही विभिन्न वैज्ञानिकों ने अलग-अलग सत्रों में अपने विचार रखे।



● संस्थान में सौर ऊर्जा इकाई का उद्घाटन

भा.कृ.अनु.प. - केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान मखदूम में सौर ऊर्जा इकाई का उद्घाटन माननीय केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह जी ने संस्थान में सौर ऊर्जा इकाई का उद्घाटन किया। इस अवसर पर श्री करिन्दा सिंह, विधायक, गोवर्धन और श्री पूरन प्रकाश विधायक, बल्देव विधान सभा भी उपस्थित थे।



● किसान दिवस और स्वच्छता पखवाड़ा

मखदूम गाँव में किसान दिवस के रूप में स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया, जिसमें 200 से अधिक किसानों और वैज्ञानिकों ने भाग लिया। इस अवसर पर कृषि और स्वच्छता के विभिन्न क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी के उपयोग पर किसानों को जागरूक किया गया।



सभा / आयोजन

● संस्थान का 39वाँ स्थापना दिवस

संस्थान के 39वें स्थापना दिवस के अवसर पर भा.कृ.अनु.प. -केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम, फरह में 12 जुलाई, 2018 को, संस्थान ने किसानों को लाभान्वित करने के लिए किसान मेला और प्रदर्शनियों का आयोजन किया, जहाँ भा.कृ.अनु.प. - केन्द्रीय भेड एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर, सरसों अनुसंधान केन्द्र, भरतपुर, भा.कृ.अनु.प. - भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान केन्द्र, झांसी, पं. दीनदयाल उपाध्याय पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय एवं गौ अनुसंधान संस्थान, मथुरा के साथ-साथ भा.कृ.अनु.प. -केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान ने अपनी हस्तांतरणीय तकनीकों और प्रकाशनों को प्रदर्शित किया। माननीय कृषि और किसान कल्याण राज्य मंत्री, भारत सरकार श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत जी ने इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में संस्थान में आये। सी.आई. आर.जी. के निदेशक डॉ. मनमोहन सिंह चौहान ने मुख्य अतिथि और अन्य गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया और उन्हें संस्थान की उपलब्धियों और संक्षिप्त विवरणों से अवगत कराया। डॉ. चौहान ने कहा कि संस्थान अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार के क्षेत्र में अथक प्रयास कर रहा है और किसानों के लाभ के लिए उन्नत बकरी उत्पादन के लिए नई तकनीकों का विकास कर रहा है। माननीय कृषि और किसान कल्याण राज्य मंत्री, भारत सरकार श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने डॉ. एम.एस. चौहान और संस्थान के कर्मचारियों को इस अवसर पर बधाई देते हुए कहा कि किसानों को वैज्ञानिक बकरी उत्पादन के प्रशिक्षण और विस्तार के माध्यम से, संस्थान महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। जिससे 2022 तक किसानों की आय दोगुनी की जा सके। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश और उत्तराखंड के एक हजार से अधिक किसानों को संबोधित करते हुए, जिसमें 50 प्रतिशत के अधिक महिलाएँ, कई बकरी किसानों की भागीदारी पर खुशी और संतोष व्यक्त किया।

अपने संबोधन में, माननीय मंत्री ने किसानों के कल्याण के लिए सरकारी योजनाओं के बारे में बताया। विशेष रूप से, उन्होंने सिंचाई जल परियोजनाओं के बारे में बताया जो कि कृषि मंत्रालय द्वारा शुरू की गई लगभग 20 लाख हेक्टेयर कृषि भूमि और दलहन उत्पादन योजनाओं को पूर्ण करेगी, जिसके परिणामस्वरूप अधिक से अधिक उत्पादन हुआ है। माननीय मंत्री ने विशेष रूप से किसानों की आय को दोगुना करने के लिए एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में पशुधन पालन को अपनाने पर जोर दिया, लेकिन कृषि उत्पादकता को प्रभावित करने वाले सूखा एवं बाढ़ पर भी ध्यान देने को कहा।

उन्होंने किसानों से दृढ़ता से कहा कि जो लोग पशु पालन कर रहे हैं, उन्हें प्रतिकूल परिस्थितियों में भी आर्थिक दुर्दशा का सामना नहीं करना पड़ेगा और आत्महत्या जैसे कदम भी नहीं उठाने पड़ेंगे। पशु पालन के साथ-साथ उन्होंने मृदा स्वास्थ्य कार्ड, स्वर्ण क्रांति और जलीय कृषि, नीली क्रांति के बारे में भी बताया। पीढ़ी-दर-पीढ़ी किसानों की घटती भूमि के समाधान के रूप में, उन्होंने किसानों की सहकारी समितियों के साथ-साथ कृषि उत्पादक कंपनी बनाकर सहकारी प्रणाली को अपनाने का सुझाव दिया, जो कि सरकार द्वारा प्रोत्साहित की जा रही है। उन्होंने केंद्र सरकार द्वारा चलाई जा रही किसान क्रेडिट कार्ड, बीमा सुविधाओं और ऐसी कई अन्य योजनाओं, पशुधन और पशुपालन के लिए ऋण सुविधाओं के बारे में विस्तार से बताया और इन सभी योजनाओं को जिम्मेदारी से लेने के लिए वैज्ञानिकों और अधिकारियों से अनुरोध किया। इस अवसर पर, माननीय मंत्री ने संस्थान के परिसर में वृक्षारोपण किया। इसके उपरान्त



सभा / आयोजन

जमुनापारी प्रक्षेत्र में नए बच्चों के बाड़े, प्रयोगशाला परिसर भवन डॉ. के. पी. पंत समिति कक्ष, किसान मेला और प्रदर्शनियों का उद्घाटन किया। मुख्य अतिथि ने विभिन्न पशुधन इकाइयों, कृषि वानिकी में सहजन प्रक्षेत्र, विभिन्न प्रयोगशालाओं का भ्रमण किया। उन्होंने भा.कृ.अनु.प. -केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान के प्रकाशनों विशेष रूप से वार्षिक रिपोर्ट 2017-18, सी.आई.आर.जी. न्यूज़लेटर, राजस्थान में बकरी उत्पादन पर पुस्तक, प्रबंधन और स्वास्थ्य, पुस्तिकाओं और भा.कृ.अनु.प. -केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान के प्रकाशनों का विमोचन किया।

माननीय मंत्री द्वारा संस्थान द्वारा विकसित तीन हर्बल दवा प्रौद्योगिकियों को व्यावसायीकरण के लिए एक दवा कंपनी को तकनीक हस्तांतरित की। माननीय मंत्री ने वैज्ञानिक बकरी पालन के लिए ग्यारह प्रगतिशील बकरी किसानों/उद्यमियों को भी सम्मानित किया एवं कहा कि अन्य किसानों को वैज्ञानिक विधि से बकरी फार्म स्थापित करने में मदद करें। उन्होंने इस अवसर पर पांच गरीब बकरी किसानों को अच्छे प्रजनक बकरे भी वितरित किए। इस अवसर पर श्री पूरन प्रकाश, माननीय विधायक (बलदेव, मथुरा), श्री कारिंदा सिंह, माननीय विधायक (गोवर्धन, मथुरा), श्री राजेन्द्र, निदेशक दीनदयाल धाम, नगला चंद्रभान, फरह, मथुरा, श्री महिपाल सिंह, जिला अध्यक्ष, भारतीय किसान मोर्चा संघ, डॉ. ए.के. तोमर, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-सी.एस.डब्ल्यू.आर.आई, अविकानगर, डॉ. प्रमोद राय, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-सरसों अनुसंधान निदेशालय आदि गणमान्य लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम के अन्त में किसान मेले के संगठन सचिव डॉ. एम. के. सिंह ने सफल आयोजन के लिए सभी को धन्यवाद दिया।

● अखिल भारतीय बकरी सुधार समन्वित परियोजना की वार्षिक समीक्षा बैठक

अखिल भारतीय बकरी सुधार समन्वित परियोजना पशु चिकित्सा विज्ञान कॉलेज, हिमाचल कृषि विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश, कृषि विज्ञान विद्यालय कांगड़ा, पालमपुर में 20-21 जुलाई, 2018 को आयोजित की गई। डॉ. आर.एस. जम्वाल, अनुसंधान निदेशक, सी.एस.के.एच.के.वी. पालमपुर ने सभी प्रतिनिधियों का हार्दिक स्वागत किया और विश्वविद्यालय के अनुसंधान गतिविधियों पर प्रकाश डाला। डॉ. एम. एस. चौहान, निदेशक भा.कृ.अनु.प. -केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान मखदूम ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था में बकरी के महत्व के बारे में बताया। अखिल भारतीय समन्वित परियोजना कार्यक्रम का विवरण प्रस्तुत किया। डॉ. चौहान ने भविष्य के बकरी उत्पादन में चुनौतियों और 2022 तक बकरी पालकों की आय को दोगुना करने के बारे में बताया। डॉ. आर.एस. गांधी, ए.डी.जी. (ए.पी.एंड बी.), भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली ने अपने संबोधन में हिमाचल प्रदेश के आनुवांशिक संसाधनों, 2022 तक किसानों की आय बढ़ाने और मांस और दूध के मूल्य वर्धन और बकरी सुधार के लिए कॉरपोरेट सेक्टर की भागीदारी के बारे में बताया। डॉ. जे.के. जेना, डी.डी.जी. (ए.एस.), भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली ने मांस और दूध उत्पादन को बढ़ाने, अनुकूलन निवारक स्वास्थ्य देखभाल की रणनीति पर प्रकाश डाला। उन्होंने बकरी के प्रभाव को बढ़ाने और पशुधन उत्पादन को 2050 तक प्रचलित उद्योग बनाने के लिए कहा। प्रो. ए.के. सारियल, कुलपति, हिमाचल कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर, ने देश की गद्दी बकरी को बेहतर बनाने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा किए गए प्रयासों के बारे में बताया। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा विकसित अच्छी तकनीकों और बेहतर जीनोटाइप उनके गुणों के चयन पर जोर दिया।



● स्वतंत्रता दिवस समारोह

72वां स्वतंत्रता दिवस भा.कृ.अनु.प. -केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान मखदूम के कर्मचारियों और उनके परिवार द्वारा पूरे उत्साह के साथ मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संस्थान के निदेशक डॉ. मनमोहन सिंह चौहान ने राष्ट्रपिता के चित्र पर माल्यार्पण किया। डॉ. चौहान ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और संस्थान के सुरक्षा कर्मचारियों के द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। सभा को संबोधित करते

सभा / आयोजन

हुए, उन्होंने कहा कि हमारे स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान, प्रतिबद्धताओं और कड़ी मेहनत से हमने स्वतंत्रता प्राप्त की है। उन्होंने देश की आजादी के बाद से कृषि, अंतरिक्ष आदि जैसे कई क्षेत्रों में भारत की प्रमुख उपलब्धियों के बारे में प्रकाश डाला और बताया कि हमारा देश निरंतर प्रगति कर रहा है। निदेशक ने संस्थान के द्वारा विशेष रूप से किये गये उत्कृष्ट कार्यों और उपलब्धियों के बारे में संक्षेप में बताया। उन्होंने संस्थान द्वारा विकसित की गई चार तकनीकों को इन्डस्ट्री को हस्तान्तरित करने में वैज्ञानिकों और सभी कर्मचारियों को बधाई दी तथा सभी कर्मचारियों से एकजुट रहने और टीम भावना से काम करने का अनुरोध किया। संस्थान के सभी कर्मचारियों को मिठाई वितरित की गई और पूरे उत्साह के साथ एक-दूसरे के बीच बधाई का आदान-प्रदान किया गया। खेल गतिविधियों का आयोजन संस्थान के कर्मचारियों और उनके परिजनों के लिए भी किया गया था। स्टाफ वेलफेयर क्लब की ओर से इस अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों के विजेताओं को निदेशक द्वारा पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।



● सतर्कता जागरूकता सप्ताह भ्रष्टाचार उन्मूलन - एक नया भारत बनाएँ

केंद्रीय सतर्कता आयोग ने 'भ्रष्टाचार उन्मूलन - एक नया भारत बनाएँ' विषय पर 29 अक्टूबर - 3 नवंबर, 2018 की अवधि के दौरान सतर्कता जागरूकता सप्ताह के लिए निर्देश जारी किये। केंद्रीय सतर्कता आयोग, नई दिल्ली द्वारा जारी उक्त निर्देश के अनुसरण में परिपत्र सं. 11.09.2018 दिनांक 24.09.2018 को, सतर्कता जागरूकता सप्ताह भा.कृ.अनु.प. -केंद्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम में 29 अक्टूबर से 3 नवंबर, 2018 तक मनाया गया। इस अवसर पर प्रयोगशाला भवन / कार्यालय और मुख्य द्वार पर प्रमुख स्थानों पर बैनर का प्रदर्शन तथा इसके साथ ही 'भ्रष्टाचार उन्मूलन - एक नए भारत का निर्माण' विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन निदेशक द्वारा किया गया।



सम्मान, पुरस्कार एवं विशिष्ट उपलब्धि



अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण पुरस्कार डॉ. रवींद्र कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक (पशु पोषण), को भा.कृ.अनु.प. -के.ब. अनु.सं. को बकरियों पर अनुसंधान के लिए शिक्षा और प्रशिक्षण विभाग, ऑस्ट्रेलिया सरकार द्वारा उद्यमिता पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वह जून -अक्टूबर, 2018 से विदेशी प्रतिनियुक्ति पर गये और सी.एस.आई. आर.ओ., कृषि और खाद्य, सेंट लूसिया -4067, ब्रिस्बेन, क्वींसलैंड, ऑस्ट्रेलिया में वरिष्ठ प्रधान अनुसंधान वैज्ञानिक डॉ. क्रिस मैकस्वीनी के निर्देशन में कार्य किया।

डॉ. रवि रंजन, वरिष्ठ वैज्ञानिक को 30 अक्टूबर से 01 नवम्बर तक पटना बिहार में एग्री व एलाइट इन्टर प्राइजेज के माध्यम से किसानों की आय को बढ़ाने के लिए ग्रामीण आजीविका सुधार वैज्ञानिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

डॉ. रवि रंजन, वरिष्ठ वैज्ञानिक को 27 - 28, नवम्बर 2018 में भा.कृ.अनु.प. - एन.डी.आर.आई. करनाल, हरियाणा में हुए भारत के पशु चिकित्सकों के समाज के 27वें वार्षिक सम्मेलन में सापीकोन - 2018 में सर्वोच्च मौखिक प्रस्तुति सम्मान प्राप्त किया।

डॉ. मनोज कुमार सिंह, प्रधान वैज्ञानिक को श्री वैकटाश्वरा पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय, तिरुपति, आन्ध्र प्रदेश द्वारा फेलो अवार्ड नेशनल एकेडमी ऑफ डेयरी साइंस द्वारा दिया गया।

डॉ. मनोज कुमार सिंह को सोसाइटी ऑफ एक्सटेशन एजुकेशन फेलो अवार्ड नौवीं नेशनल एक्सटेशन एजुकेशन कांग्रेस सीफेट, रानीपूल, सिक्किम, द्वारा 15 से 17, नवम्बर, 2018 में प्रदान किया गया।

डॉ. बृजमोहन, प्रधान वैज्ञानिक को शिक्षा प्रसार में उत्कृष्ट कार्य हेतु सोसाइटी ऑफ एक्सटेशन एजुकेशन फेलो अवार्ड नौवीं नेशनल एक्सटेशन एजुकेशन कांग्रेस सीफेट, रानीपूल, सिक्किम, द्वारा 15 से 17, नवम्बर, 2018 में प्रदान किया गया।

डॉ. एस.पी. सिंह, वैज्ञानिक को नेशनल एकेडमी ऑफ डेयरी साइंस द्वारा एसोसिएटशिप अवार्ड श्री वैकटाश्वरा पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय, तिरुपति, आन्ध्र प्रदेश में प्रदान किया गया।

डॉ. चेतना गंगवार एवं टीम को एमेटि जीवाणु प्रौद्योगिकी संस्थान जयपुर में अक्टूबर 22-26, 2018 को आयोजित एशियन रीजनल बकरी सम्मेलन 2018 में उनके शोध पत्र 'बकरी पालन में महिलाओं का योगदान' पर सर्वोत्तम प्रस्तुति पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

डॉ. ए.के. दीक्षित, वरिष्ठ वैज्ञानिक को शिक्षा प्रसार में उत्कृष्ट कार्य हेतु सोसाइटी ऑफ एक्सटेशन एजुकेशन फेलो अवार्ड नौवीं नेशनल एक्सटेशन एजुकेशन कांग्रेस सीफेट, रानीपूल, सिक्किम, द्वारा 15 से 17, नवम्बर, 2018 में प्रदान किया गया।



भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान

(ISO 9001:2008 प्रमाणित संस्थान)

मखदूम, फरह 281 122, मथुरा (उ.प्र.) भारत

दूरभाष नं.: 0565-2763380, फैक्स नं.: 0565-2763246

ई-मेल: director@cirg.res.in,

वेबसाइट: <http://cirg.res.in>

हेल्पलाइन नं.: 0565-2763320